International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का उद्‌भव एवं स्वरूप

ईशा कपूर

शोध छात्रा

डॉ0 सुमन राठी

शोध निर्देशिका

हिन्दी विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर (रोहतक)

समय परिवर्तनशील तथा गतिशील है। इस परिवर्तन का प्रभाव समाज तथा व्यक्ति पर प्रत्यक्ष तथा स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। परिवर्तन कभी एकाएक नहीं अपितु शनैः शनैः आता है। किसी भी देश की राजनैतिक परिस्थितियाँ भी वहाँ के सामाजिक परिवेश को परिवर्तित करने में प्रमुख भूमिका निभाती है। यह परिवर्तन जीवन के सभी क्षेत्रों के साथ–साथ कला एवं संस्कृति को भी प्रभावित करता है। साहित्य संस्कृति का अभिन्न अंग माना गया है। साहित्यकार अपने देशकाल से प्रभावित होकर ही साहित्य सर्जन करता है।

भारत में अंग्रेजी शासन की स्थापना के साथ अंग्रेजी भाषा से शीघ्र प्रभावित क्षेत्रों में साहित्यकारों ने सामाजिक, नैतिक उत्थान तथा देश की सांस्कृतिक परम्पराओं के संरक्षण हेतु चलाए गए आन्दोलनों से प्रभावित होकर अन्य विधाओं के साथ–साथ उपन्यास भी लिखें। यही वह समय था जब उपन्यास की विकास यात्रा का प्रगतिशील दौर आरम्भ हुआ। यह क्रम निरन्तर चलता रहा। इस अवधि में पहले की तरह सामाजिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, तिलस्मी एवं जासूसी उपन्यास लिखे गए। एक ही विषय पर बार–बार उपन्यास पढ़ कर पाठक ऊबने से लगे। उपन्यासकार भी कुछ नया लिखने को आतुर था।

द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति पर देश की परिस्थितियों में भी महान परिवर्तन आया। लेखक भ्रामिक, काल्पनिक, तिलस्मी एवं जासूसी के मायाकाल को तोड़कर जागरूक हुआ और यह समय की मांग भी थी। यह साहसिक कार्य प्रेमचन्द युग में आरम्भ हुआ। इस समय उपन्यासकारों ने समाज में व्याप्त शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई। इसके अतिरिक्त अनेक सामाजिक समस्याओं जैसे विधवा विवाह, बेमेल विवाह, दहेज, वेश्या समस्या, जाति–वर्ग समस्या तथा अवैध प्रेम, विवाहेतर संबंधों पर भी उपन्यासकारों ने उपन्यास लिखें। ये सभी विषय समाज के लगभग सभी वर्गों की समस्याओं का चित्रण करते थे। समस्या तब उत्पन्न हुई जब समाज में व्यक्ति को उपेक्षित कर उसकी व्यक्तिगत समस्याओं को बिल्कुल अनदेखा कर दिया। समाज में कुछ पात्रों के व्यवहार की टूटन, विद्रोही स्वभाव तथा असामान्य व्यवहार परलक्षित होने के कारण यकायक कुछ उपन्यासकारों का ध्यान आम आदमी की समस्याओं की ओर गया। तब वे जिज्ञासु होकर व्यक्ति के असामान्य व्यवहार के मूल कारणों को जानने के लिए इच्छुक हुए।

इस समय भारतीय लेखकों पर पाश्चात्य दर्शन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता था। यहाँ के लेखक फ्रायड एडलर तथा जुंग के मनोवैज्ञानिक तथा मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तों को मानने लगे थे। वे पाश्चात्य

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दर्शन एवं चिन्तन के प्रति आकर्षित थे। लेखकों ने उन के सिद्धान्तों का अनुसरण किया मनुष्य (व्यक्ति) की व्यक्तिगत समस्याओं को अपनी लेखनी का विषय बनाया। इन लेखकों में इलाचन्द्र जोशी, जैनेन्द्र, तथा अज्ञेय प्रमुख हैं। इस समय लिखे गए उपन्यासों में जैनेन्द्र के परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, सुखदा, व्यतीत तथा जयवर्धन आदि प्रमुख हैं। इन उपन्यासों में नारी की पीड़ा तथा मानव की मनोवैज्ञानिक प्रवृति तथा भारतीय दर्शन के विभिन्न रूपों का चित्रण किया गया है। इलाचन्द्र जोशी के नदी के द्वीप, जहाज का पंछी तथा सन्यासी आदि उपन्यासों ने भी अभूतपूर्व लोकप्रियता अर्जित की। अज्ञेय द्वारा लिखित प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' में नायक के अन्तरमन की पीड़ा का सुन्दर चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत किया।

इन सभी उपन्यासों में नारी पुरूष पात्रों के अन्तरंग संबंधों नारी की पीड़ा, सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ने का भय, निराशा, कुंठा आन्तरिक द्वन्द्व का सुन्दर अंकन किया गया है। महत्वकांक्षा की पूर्ति न होने पर हीनभावना, हीनभावना जनित निराशा, निराशा जनित पीड़ा तथा फलस्वरूप आक्रामक व्यवहार का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण किया गया है। इन उपन्यायों के पात्र कभी स्वयं पीड़ित होते हैं कभी दूसरों को पीड़ित करते हैं। ये सभी पात्र स्वयं का स्वयं से साक्षात्कार करते हुए दिखते हैं।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास में मन की भूमिका –

मनोविज्ञान मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। वास्तव में मानव व्यवहार का विभिन्न दृष्टिकोणों से उल्लेख करना ही मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का मूल उद्देश्य है। मानव व्यवहार उसके मन तथा मस्तिष्क द्वारा परिचालित होता है। मन की गति अति तेज होती है। यह क्षणभ्र में सैंकडों–हजारों मील की यात्रा क्षणभर में तय कर लेता है। भूत–भविष्य के दर्शन कर पलभर में वर्तमान में लौट आता है। विज्ञान की अभूतपूर्व प्रगति एवं खोजों ने तो मन को यंत्र सा बना दिया है। मानव की महत्वकांक्षाओं के बढ़ने के पीछे विज्ञान की भी प्रमुख भूमिका है। भौतिक सुखों के आकर्षण तथा लिप्तता ने मानव के जीवन में हड़कम्प मचा दिया है। अपना जीवन स्तर ऊँचा उठाने के लिए एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ सी लग गई है। इन सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए मानव नित नए–नए हथकंडे अपनाता है। सफल न होने पर निराश हो जाता है। दुःखी होकर कभी वह स्वयं तो कभी आक्रामक होकर समाज में विद्रोह करता है। इस के पीछे मानव का मन ही क्रियाशील रहता है। मानव शरीर में मन एक महत्वपूर्ण निराकार भाग है जो सदैव गतिमान तथा क्रियाशील रहता है। मन जन्म से ही मानव शरीर का भाग होता है।

सभी मनोवैज्ञानिक भी मन को मानव व्यवहार की मूल संचालक शक्ति मानते हैं। फ्रायड ने मनोविश्लेषण पद्धति के आधार पर मन के तीन स्तर अथवा अवस्थाएँ मानी है। प्रथम स्तर को 'चेतन मन' (ब्वदेबपवने) दूसरे स्तर को 'अचेतन मन' (नद.बवदेबपवने) तथा तीसरे भाग को 'अर्द्धचेतन मन' (नइ.बवदेबपवने) कहा जाता है। इन तीनों भागों का अपना–अपना कार्य क्षेत्र है। इन तीनों की क्रियाशीलता, सक्रियता तथा निष्क्रियता का प्रभाव सदैव मानव व्यवहार पर पड़ता है।

चेतन मन –चेतन मन मानव शरीर का बहुत सक्रिय, संवेदनशील तथा क्रियाशील भाग है। यह भाग ज्ञानवान तथा विवेकी है। यह भाग जागृतावस्था में बाहरी घटनाओं एवं परिस्थितियों से प्रभावित होकर कार्य करता है। यह प्रत्येक स्थिति पर विवेकपूर्ण निर्णय लेता है। वास्तव में चेतन मन में जनित सभी इच्छाएँ बुद्धिपरक तथा आदर्शपरक होती है तथा इसके निर्णय भी ठोस होते हैं। मानव शरीर का यही एक मात्र

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महत्वपूर्ण भाग है जो मानव को सामाजिक मर्यादा, बन्धन एवं नैतिकमूल्यों से अवगत कराता रहता है। चेतन मन मानव के व्यक्तित्व की आधारशिला है जिसकी उसके व्यक्तित्व निर्माण में प्रमुख भूमिका एवं योगदान होता है।

अचेतन मन –चेतन मन के पश्चात् मानव मस्तिष्क का 3/4 भाग अचेतन मन कहलाता है। यह मानव व्यवहार को अपने अनुसार चलाता है। यह भाग जड़ न होकर सदैव गतिशील रहता है। यह मनुष्य की शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं का निर्माता है। यह सामाजिक बन्धनों नियमों, मर्यादाओं तथा नैतिक मूल्यों को स्वीकार नहीं करता। यह सदैव मनमानी करता है। अचेतन मन वास्तविकता को नकारता है। विद्वानों के अनुसार अचेतन मन ही चेतन मन को अपने अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य करता रहता है। इसीलिए चेतन मन तथा अचेतन मन में सदैव द्वन्द्व की स्थिति बनी रहती है। इस द्वन्द्व का प्रभाव मानवव्यवहार को प्रभावित करता रहता है। फ्रायड ने अचेतन मन को 'दमित काम भाव का संग्रहालय'[1] कहा है।

अर्द्धचेतन मन –अर्द्धचेतन मन मानव मन का तीसरा तथा महत्वपूर्ण भाग है।इसके कई अन्य नाम भी है। जैसे – अवचेतन, पूर्वचेतन, चेतनोन्मुख अथवा इषद्ज्ञान। इसका मूल स्थान मनुष्य की अज्ञात इच्छाओं विचारों तथा भावनाओं में होता है। अर्द्धचेतन मन मन का एक द्वार का कार्य करता है जिसके माध्यम से अचेतन मन की इच्छाएँ छद्म रूप से जबरन चेतन मन में घुसने का प्रयास करती है। कभी–कभी लुकछिप कर अथवा वेगपूर्वक चेतन मन में प्रवेश कर इसकी कार्यशैली को प्रभावित भी करती है। यह प्रभाव मानव के व्यवहार पर स्पष्ट दिखाई देता है क्योंकि मानव व्यवहार बदल जाता है। साहित्यकारों ने भी अर्द्धचेतन मन की शक्ति की सत्ता को स्वीकार किया है। प्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पन्त ने अपने नाटक 'रजत शिखर' में पात्र के द्वारा अवचेतन मन की इस प्रकार सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की है :

''अवचेतन की
प्रबल शक्ति से ये संतत अनभिज्ञ रहे हैं
उच्च ध्येय से पीड़ित है इन की सुप्तात्मा
बोधात्मा पर पित्रय प्रभाव रहा छुटपन से
अहमात्मा नित हीनभाव से रही प्रताड़ित
दमित भावना मार्ग खोजती क्षुधापूर्ति का
जिससे संघर्षता रहता नित चेतन मन में।''[2]

इस पद की अन्तिम दोनों पंक्तियों में अवचेतन और चेतन मन के संघर्ष का चित्रण किया गया है। एक पाश्चात्य विद्वान ने इसे इस प्रकार परिभाषित किया है :

''पूर्व चेतन, मन का वह भाग है जिसमें ऐसी इच्छाएँ या विचार निहित रहते हैं, जिनका प्रत्यावहन किया जा सकता है।''[3]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मन के तीनो स्तरों को भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों ने परिभाषित किया है। इसके लिए एक सरल परिभाषा विद्वानों ने दी है। उन्होंने मन को 'हीमशैल' कहा हे। ''हीमशैल में एक छोटा सा अंश जो बाहर लक्षित होता है उससे कई गुणा ज्यादा बड़ा अंश पानी में छिपा रहता है। बाहर दृष्टिगोचर होने वाला अंश मानो चेतन मस्तिष्क है और अन्दर छिपा रहने वाला मानो अवचेतन मन है।''[4]

मन के तीनों स्तरों का सदैव आपस में संघर्ष होता रहता है। ये आपस में ही उलझते रहते हैं। मानव की कमजोर वृत्तियाँ, दमित इच्छाएँ तथा बुरे विचार सदैव अचेतन मन में रहते हैं। ये जन्म से ही वर्तमान तक स्मृति रूप में मन में पड़ी रहती है। अर्द्धचेतन मन दमित इच्छाओं तथा कुत्सित वृतियों को समाज का भय दिखाता है। वह चेतन मन का रक्षक बनकर दमित इच्छाओं को चेतनमन में जाने से रोकता है। असफल रहने पर यही दमित इच्छाएँ मानव व्यवहार को प्रभावित करता है तथा उसका व्यवहार असामान्य हो जाता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास की विभिन्न परिभाषाएँ –

विभिन्न विद्वानों ने समझ–परख पर मनौवैज्ञानिक उपन्यासों की परिभाषा निश्चित की है। ये परिभाषाएँ मनोवैज्ञानिक उपन्यास के स्वरूप को स्पष्ट करने में सहायक हैं।

1. डॉ० देवराज उपाध्याय के मत में – ''यदि किसी उपन्यास में घटना या अनुभूति के आत्मनिष्ठ रूप की अभिव्यक्ति पर आग्रह पाएंगे तो उसे मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहेंगे।''[5]
2. डॉ० रामदरश मिश्र के अनुसार – ''मनोवैज्ञानिक उपन्यास कहने का तात्पर्य उन उपन्यासों से है जो मूलतः मनोविश्लेषण पर आधारित है।''[6]
3. डॉ० सत्यपाल चुघ के अनुसार – ''मनोवैज्ञानिक उपन्यासों प्रधान पात्र की जीवन गति या मनोगति कथा का स्वरूप नियत करती है। चरित्र की अन्तर्यात्रा कथा को गति देती है, कथा की गति चरित्र को नहीं।''[7]
4. मुंशी प्रेमचन्द ने भी परोक्ष रूप से मनोवैज्ञानिक उपन्यास के बारे में लिखा है – ''मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्य को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।
5. डॉ० शशिभूषण सिंहल के अनुसार – ''मनोवैज्ञानिक उपन्यास में व्यक्ति को सर्वग्राही आधिपत्य से मुक्ति दिलाकर, उसकी मूल चेतना को अभिव्यक्त होने का अवसर दिया जाता है।''[8]
6. डॉ० रमाकान्ता के अनुसार – ''मनोवैज्ञानिक उपन्यास पात्र की मानसिकता तथा अन्तर्द्वन्द्व को प्रकट करता है इसमें घटनाओं का सहारा पात्र की मनोग्रंथियों के रहस्य को खोलने के लिए किया जाता है।''[9]

मनोवैज्ञानिक उपन्यास –

उपर्युक्त विवेचन के निष्कर्ष के आधारपर मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है। इन उपन्यासों में व्यक्ति के मन के अन्तःसंघर्ष का सूक्ष्म चित्रण किया जाता है। उपन्यास के माध्यम से उपन्यासकार पात्र के अवचेतन तथा अपचेतन मन की परतों को उधेड़ कर रख देता है। इसी के साथ पात्र की दमित वासनाओं, कुंठाओं, नारी–पुरूष के अहम्, प्रेम की समस्या, दामपत्य विघटन का मनोविज्ञान के धरातल पर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चित्रण किया जाता है। प्रेमचन्द युग के अन्तिम चरण अथवा उत्तर प्रेमचन्द युग में जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी के बाद अज्ञेय का नाम मनोवैज्ञानिक तथा मनोविश्लेषणवादी उपन्यासकारों में प्रमुख है।

इलाचन्द्र जोशी द्वारा बहुचर्चित उपन्यासा सन्यासी के बाद के उपन्यासों में जिप्सी, जहाज का पंछी उपन्यासों में व्यक्ति की दमित वासनाओं तथा निराशा जनित कुंठा का चित्रण मिलता है। जैनेन्द्र ने अपने उपन्यासों परख, सुनीता, त्यागपत्र तथा कल्याणी में दामपत्य जीवन में नारी पुरूष की प्रेम समस्या का मनोवैज्ञानिक धरातल पर चित्रण किया गया है। अज्ञेय तो पाश्चात्य विद्वानों फ्रायड, टी.एस.इलियट तथा डी. एच. लॉरेंस की विचारधारा से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने मनोविज्ञान तथा अस्तित्ववाद का सुन्दर समन्वय अपने उपन्यासों में किया। उनके द्वारा लिखे गए दो उपन्यास 'नदी के द्वीप' तथा 'अपने–अपने अजनबी' इसके सुन्दर उदाहरण है। इनका एक उपन्यास 'शेखर एक जीवनी' में भी मनोविज्ञान तथा अस्तित्ववाद दर्शन का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। शेखर के व्यक्तित्व में व्यक्ति के आत्मदर्शन अथवा आत्म साक्षात्कार का सुन्दर चित्रण किया गया है। 'नदी के द्वीप' में एक व्यक्ति विशेष की खोज न होकर चार व्यक्तियों की खोज है। ये पात्र आपस में टकाराते रहते हैं तथा फिर भी आपस में जुड़े रहते है।

इन उपन्यासकारों के पश्चात् आगे चलकर देवराज ने अपने उपन्यासों मे 'पंथ की खोज', 'बाहर भीतर', 'रोड़े और पत्थर', 'अजय की डायरी' में शिक्षित मध्यवर्ग के करूण यथार्थ का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया गया है। इसके अतिरिक्त कृष्णा सोबती, दयानन्द वर्मा तथा राजकमल चौधरी ने भी 'सूरज मुखी अन्धेरे के' तथा 'मछली मरी हुई', 'जिन्दाबाद–मुर्दाबाद', 'मित्रो मरजानी' प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक उपन्यास लिखे गए।

संदर्भ–

1. डॉ० नगेन्द्र, मानविकी परिभाषिक कोश (मनोविज्ञान खंड), सम्पादक पद्मा अग्रवाल, पृ0 277
2. सुमित्रानन्दन पन्त, रजत शिखर, पृ0. 20 प्रथम संस्करण 2004, भारती भंडार, लीडर प्रैस, प्रयाग।
3. ठतवूद श्रण्थ्ण् चेलबीवकलदंउपबे व|िइदवतउंस ठमींअपवनतए च्ण् 164ए थ्पतेज |ककपजपवदण
4. डॉ० मनीषा ठक्कर, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यासः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, पृ0 41–42, प्रथम संस्करण 2010
5. वहीं
6. डॉ० रमा कान्ता, हिन्दी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में असामान्य पात्र, पृ0 24–25, संस्करण 2010
7. वहीं
8. डॉ० मफतलाल पटेल, हिन्दी में मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ0 28
9. डॉ० रमाकान्ता, हिन्दी मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में असामान्य पात्र, पृ0 2